

CLASS : 12th (Sr. Secondary)

4374/4324

Series : SS-M/2019

Total No. of Printed Pages : **8**

MARKING INSTRUCTIONS AND MODEL ANSWERS

संगीत हिन्दुस्तानी (वादन)

MUSIC HINDUSTANI (Instrumental)

सितार

SITAR

ACADEMIC/OPEN

(Only for Fresh/Re-appear Candidates)

उप.परीक्षक मूल्यांकन निर्देशों का ध्यानपूर्वक अवलोकन करके उत्तर-पुस्तिकाओं का मूल्यांकन करें। यदि परीक्षार्थी ने प्रश्न पूर्ण व सही हल किया है तो उसके पूर्ण अंक दें।

General Instructions :

- (i) Examiners are advised to go through the general as well as specific instructions before taking up evaluation of the answer-books.
- (ii) Instructions given in the marking scheme are to be followed strictly so that there may be uniformity in evaluation.
- (iii) Mistakes in the answers are to be underlined or encircled.
- (iv) Examiners need not hesitate in awarding full marks to the examinee if the answer/s is/are absolutely correct.

4374/4324

P. T. O.

- (v) Examiners are requested to ensure that every answer is seriously and honestly gone through before it is awarded mark/s. It will ensure the authenticity as their evaluation and enhance the reputation of the Institution.
- (vi) A question having parts is to be evaluated and awarded partwise.
- (vii) If an examinee writes an acceptable answer which is not given in the marking scheme, he or she may be awarded marks only after consultation with the head-examiner.
- (viii) If an examinee attempts an extra question, that answer deserving higher award should be retained and the other scored out.
- (ix) Word limit wherever prescribed, if violated upto 10%. On both sides, may be ignored. If the violation exceeds 10%, 1 mark may be deducted.
- (x) Head-examiners will approve the standard of marking of the examiners under them only after ensuring the non-violation of the instructions given in the marking scheme.
- (xi) Head-examiners and examiners are once again requested and advised to ensure the authenticity of their evaluation by going through the answers seriously, sincerely and honestly. The advice, if not headed to, will bring a bad name to them and the Institution.

महत्वपूर्ण निर्देश :

- (i) अंक-योजना का उद्देश्य मूल्यांकन को अधिकाधिक वस्तुनिष्ठ बनाना है। अंक-योजना में दिए गए उत्तर-बिन्दु अंतिम नहीं हैं। ये सुझावात्मक एवं सांकेतिक हैं। यदि परीक्षार्थी ने इनसे भिन्न, किन्तु उपयुक्त उत्तर दिए हैं तो उसे उपयुक्त अंक दिए जाएँ।
- (ii) शुद्ध, सार्थक एवं सटीक उत्तरों को यथायोग्य अधिमान दिए जाएँ।
- (iii) परीक्षार्थी द्वारा अपेक्षा के अनुरूप सही उत्तर लिखने पर उसे पूर्णांक दिए जाएँ।
- (iv) वर्तनीगत अशुद्धियों एवं विषयांतर की स्थिति में अधिक अंक देकर प्रोत्साहित न करें।
- (v) भाषा-क्षमता एवं अभिव्यक्ति-कौशल पर ध्यान दिया जाए।
- (vi) मुख्य-परीक्षकों/उप-परीक्षकों को उत्तर-पुस्तिकाओं का मूल्यांकन करने के लिए केवल *Marking Instructions/Guidelines* दी जा रहीं हैं, यदि मूल्यांकन निर्देश में किसी प्रकार की त्रुटि हो, प्रश्न का उत्तर स्पष्ट न हो, मूल्यांकन निर्देश में दिए गए उत्तर से अलग कोई और भी उत्तर सही हो तो परीक्षक, मुख्य-परीक्षक से विचार-विमर्श करके उस प्रश्न का मूल्यांकन अपने विवेक अनुसार करें।

1. रजाखानी गत – 2 अंक

तोड़े – 2 अंक

4

गत तथा तोड़ों में राग में लगने वाले स्वर, राग का स्वरूप, स्वर चिन्ह इत्यादि सभी सही होने पर पूरे अंक प्रदान कर सकते हैं।

अथवा

रागों के समय सिद्धान्त में ऊर्ध्व दर्शक स्वर, वादी सम्बादी स्वर ग नी कोमल, रे ध शुद्ध वाले राग इत्यादि सभी वर्गों का उचित विवरण होने पर दी गई सामग्री अनुसार अंक प्रदान करें।

2. जीवन परिचय में जन्मतिथि पिता का नाम, संगीत शिक्षा, संगीत गुरु तथा संगीत के प्रति किए गये कार्यों का उचित विवरण होने पर अंक प्रदान करें।

4

3. राग भैरव

थाट भैरव, जाति सम्पूर्ण-सम्पूर्ण

रे ध कोमल बाकी स्वर शुद्ध, वादी स्वर - ध, सम्बादी रे, गायन समय प्रातः काल 4 से 7 बजे तक।

सम प्रकृतिक राग – कलिंगडा तथा रामकली।

भीमपलासी :

थाट – काफी, स्वर – ग नी कोमल तथा अन्य स्वर शुद्ध।

आरोह में रे ध वर्जित, अवरोह में सातों स्वर।

(5)

4374/4324

जाति – औड़व-सम्पूर्ण वादी स्वर मध्यम तथा सम्वादी स्वर षड्ज गाने-बजाने का समय दिन का तीसरा प्रहर।

मुख्य परिचय के अतिरिक्त विशेषताओं का वर्णन किए जाने पर अंक प्रदान करें। 2

4. तिलवाड़ा ताल

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
धा	तिरकिट	धिं	धिं	धा	धा	तिं	तिं	ता	तिरकिट	धिं	धिं	धा	धा	धिं	धिं
X				2				0				3			

झपताल

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
धीं	ना	धिं	धिं	ना	तिं	ना	धिं	धिं	ना
X		2			0		3		

2

एक गुन के लिए 1 अंक

दुगुन के लिए 1 अंक

इस प्रकार निर्धारित करें।

4374/4324**P. T. O.**

5. गाने-बजाने की क्रिया को वर्ण कहते हैं। दूसरे शब्दों में गाते-बजाते समय विभिन्न स्वरों के प्रयोग के कारण आवाज़ को जो चाल मिलती है उसे वर्ण कहते हैं।

वर्ण चार प्रकार के होते हैं। स्थायी, आरोही, अवरोही व संचारी वर्ण।

2

6. कृत्तन : यह क्रिया सितार पर की जाती है। बांये हाथ से दो तीन अथवा चार स्वरों के समूह को एक साथ बजाने की क्रिया को कृत्तन कहते हैं।

1

7. आधुनिक काल में संगीत के शास्त्रीय पक्ष की ओर जनता का ध्यान आकर्षित करने का श्रेय भातखण्डे जी को दिया जाता है।

उन्होंने बहुत से रागों के गीत एकत्रित किए फिर उनकी स्वरलिपि 'क्रमिक पुस्तक मालिका' नामक पुस्तक में संग्रहीत किया तथा जनता के सम्मुख रखा। क्रमिक पुस्तक मालिका 6 भागों में लिखी गई। इसके अतिरिक्त अभिनव राग मंजरी, लक्ष्य संगीत, स्वर मालिका इत्यादि पुस्तकें रची। उन्होंने थाट राग वर्गीकरण बनाया। सभी रागों को 10 थाटों में विभाजित किया। इन्होंने नवीन स्वरलिपि पद्धति भातखण्डे पद्धति के नाम से बनाई जो आज भी प्रचार में है।

1

8. आधुनिक काल में थाट राग वर्गीकरण प्रचार में है। सभी रागों के दस थाटों में विभाजित किया गया। ये थाट हैं :

1

बिलावल थाट, कल्याण थाट, ख़माज, काफी, भैरव भैरवी, आसावरी, पूर्वी, मारवा, तोडी।

9. संगीत रत्नाकर ग्रन्थ शारङ्ख देव जी ने लिखा था। इसमें सात अध्याय हैं।

उन्होंने 22 श्रुतियाँ और 12 स्वर माने। उन्होंने गन्धार ग्राम का विस्तृत विवरण पुस्तक में दिया है। इत्यादि। 1

10. लूम्बा, तबली, डांठ, परदे, तारें, घुड़च, तार, मेंस, तार गहन, खूंटिया, तरबे इत्यादि। 1

11. आरोह :

नि स ग म प नि सं
सं नि ध प, में प ग म ग रे स 1

12. राग केदार 1

13. आठ मात्रा पर 1

14. वादी-मध्यम, सम्वादी-षड्ज 1

15. स्वामी हरिदास 1

16. सात 1

(8)

4374/4324

17.	थाट खमाज	1
18.	(क) कोष्ठ में बन्द स्वर	1
19.	(ग) नाट्यशास्त्र	1
20.	(ग) तीनताल	1
21.	(ख) औड़व-सम्पूर्ण	1

4374/4324